अगस्त, 2015 ■ मूल्य : 30 रुपए

वर्तमान साहित्य

साहित्य, कला और सोच की पत्रिका

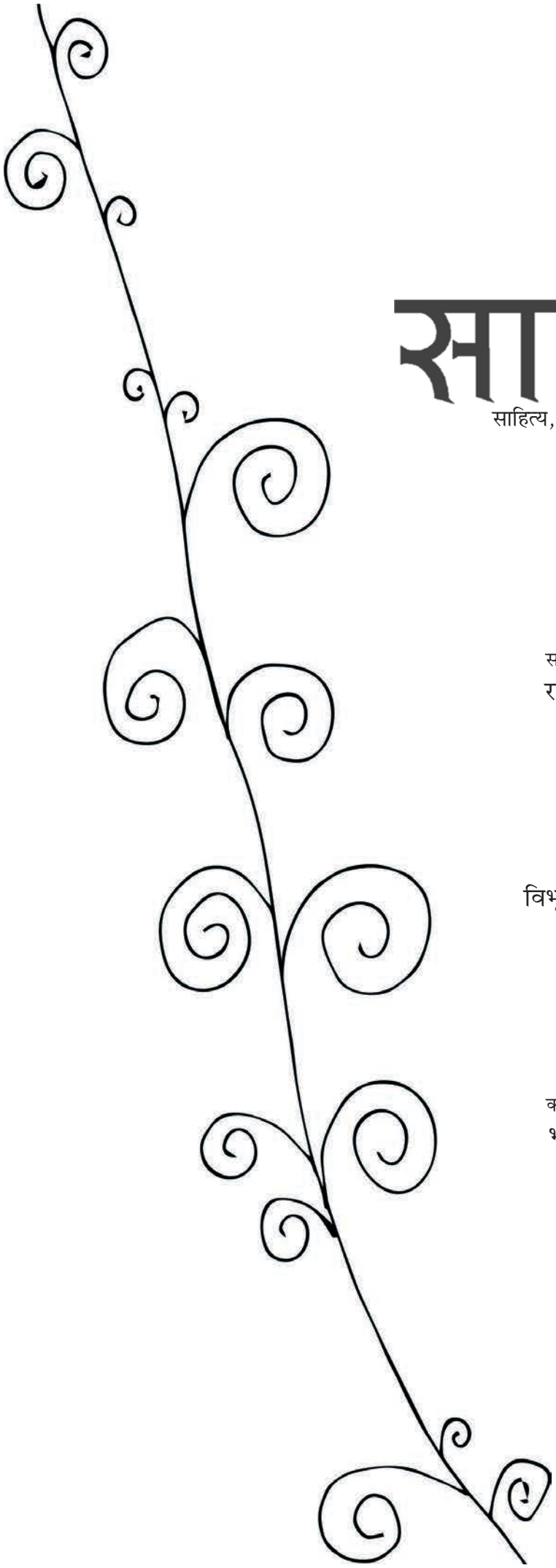

वर्तमान साहित्य

साहित्य, कला और सोच की पत्रिका

वर्ष 32 ❑ अंक 8 ❑ अगस्त, 2015

सलाहकार संपादक
रवीन्द्र कालिया

संपादक
विभूति नारायण राय

कार्यकारी संपादक
भारत भारद्वाज

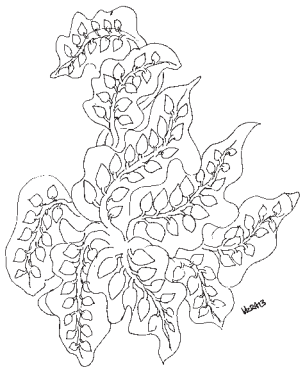

वर्ष 32 ❑ अंक 7 ❑ जुलाई, 2015
RNI पंजीकरण संख्या 40342/83
डाक पंजीयन संख्या ए.एल.जी./63, 2013-2015

संपादकीय कार्यालय :
टी/101, आम्रपाली सिलिकॉन सिटी, सेक्टर-76,
नोएडा-201306 मो. 09643890121

Email : vartmansahitya.patrika@gmail.com
Website : vartmansahitya.com

आवरण एवं भीतरी रेखांकन : दिलीप कुमार शर्मा 'अज्ञात'

सहयोग राशि : एक प्रति मूल्य : 30/-; ☐ वार्षिक : 350/-;
☐ संस्थाओं व लाइब्रेरियों के लिए 500/- ☐ आजीवन : 11000/-
☐ **विदेशों में वार्षिक** : 70 डॉलर।

बैंक के माध्यम से सदस्यता शुल्क भेजने के लिए
वर्तमान साहित्य
चालू खाता संख्या : 85141010001260
IFSC : SYNB0008514,
सिंडीकेट बैंक, रामघाट रोड, अलीगढ़-202002

कृपया राशि भेजने की सूचना तत्काल ईमेल अथवा एसएमएस द्वारा भेजें।

सदस्यता से सम्बन्धित सारे भुगतान मनीऑर्डर/ड्राफ़्ट/चैक/बैंक के माध्यम से **वर्तमान साहित्य** के नाम से संपादकीय कार्यालय के पते पर ही भेजे जाएँ। मनीऑर्डर भेजने के साथ ही पत्र द्वारा अपना पूरा पता फोन नं. सहित सूचित करें।

प्रकाशक, मुद्रक, संपादक विभूति नारायण राय की ओर से, रुचिका प्रिंटर्स, दिल्ली-110032 (9212796256) द्वारा मुद्रित तथा 28, एम.आई.जी., अवन्तिका-I, रामघाट रोड, अलीगढ़-202001 से प्रकाशित।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से **वर्तमान साहित्य**, संपादक मंडल या संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। संपादन एवं संचालन पूर्णतया अवैतनिक और अव्यावसायिक।

अंदर की बात

आलेख

कर्तार सिंह सराभा : सिद्धांत और व्यवहार के बीच पाप की छाया का निषेध / *प्रो. प्रदीप सक्सेना* 3

इस्मत चुग़ताई-मंज़र पसमंज़र / *प्रो. अली अहमद फ़ातमी* 28

धारावाहिक उपन्यास-3

कल्चर वल्चर / *ममता कालिया* 12

अनुवाद

ताला (अर्जेंटिना की कहानी) / *मूल : फरनांडो सोरेंटिनो*
रूपांतरण : डॉ. विजय शर्मा 16

कंकड़ खाने की आदत (बांग्ला कहानी) /
मूल : रमानाथ राय
अनुवाद : दिलीप कुमार शर्मा 'अज्ञात' 20

कविताएं

अभिनव निरंजन 25

जितेन्द्र धीर 26

कहानी

घोड़ला / हरिराम मीणा 33

कहानी कभी नहीं मरती / सुशांत सुप्रिय 39

कचौड़ी गली / अनिता गोपेश 44

फ्री लंच / वन्दना मुकेश 63

मीडिया

मीडिया की शब्दावली सचमुच विचित्र है /*प्रांजल धर* 65

समीक्षा

इतिहास से भूगोल तक / *स्वप्निल श्रीवास्तव* 69

शिक्षा का सच और सार्थकता की तलाश / *धर्मेन्द्र सुशान्त* 71

स्तंभ

रचना संसार / *सूरज प्रकाश* 73

तेरी मेरी सबकी बात /*नमिता सिंह* 76

सम्मति : इधर-उधर से प्राप्त प्रतिक्रियाएं 79

कर्तार सिंह सराभा

सिद्धांत और व्यवहार के बीच पाप की छाया का निषेध

□ प्रदीप सक्सेना

'हिंदू पंच' के 'बलिदान अंक' में शचीन्द्रनाथ सान्याल[1] के बारे में श्रीयुत बालकृष्ण पंत ने टिप्पणी की है –

''श्री शचीन्द्रनाथ सान्याल का जन्म सन् 1893 ई. में कलकत्ता में हुआ था। इनके पिता श्रीयुत हरिनाथ सान्याल यद्यपि एक सरकारी नौकर थे, फिर भी इनमें राष्ट्रीयता का भाव बहुत अधिक था। 1908 ई. में जबकि श्री शचीन्द्रनाथ की उम्र सिर्फ 15 वर्ष की थी, उनका देहान्त हो गया। पर देहान्त के पूर्व ही अपने पुत्रों को इन्होंने कलकत्ते की 'अनुशीलन समिति' में भर्ती करा दिया था। पिता की मृत्यु के बाद श्री शचीन्द्रनाथ बनारस आये और यहाँ पर नवयुवकों का संगठन आरंभ कर दिया। 17 वर्ष की अवस्था में ही इन्होंने तीन शाखाओं सहित एक बढ़िया संस्था संगठित कर ली। कुछ दिनों तक इसके मूल केंद्र के 300 तथा शाखा-केन्द्रों के 100 से 150 तक सदस्य थे। 1915 ई. में इस संस्था को पुलिस ने विनष्ट कर डाला।''[2]

यह कैसा संयोग है, कि कर्तार सिंह सराभा भी जब सक्रिय हुए तो उनकी उम्र भी 17 वर्ष की ही थी। यानी हम युवा बंगाल और युवा पंजाब की 'सांवली आत्माओं' को 'गोरे आकाश' में बेख़ौफ़ और बेचैन पंख पसारे उड़ता देखते हैं।

'हिंदू पंच' का बलिदान अंक 1930 में प्रकाशित हुआ था। शचीन्द्रनाथ अपनी प्रसिद्ध आत्मकथा 'बंदी जीवन' 1922 में प्रस्तुत कर चुके थे लेकिन टिप्पणीकार ने 1930 में अपनी टिप्पणी लिखने से पहले 'बंदी जीवन' को नहीं पढ़ा था। नहीं तो पंजाब और बंगाल के संबंध को वह ज़रूर समझ पाते। इसलिए नहीं कि यह दो दोस्तों–सान्याल और सराभा की कहानी है– यह तो ''सशस्त्र साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष की ऐतिहासिक प्रतिश्रुति'' की कथा है। अखिल भारतीय उद्देश्य के प्रतिफलन की गाथा। उनका दोष भी कोई ज़्यादा नहीं है, क्योंकि अभी तक भी यह अखिल भारतीय उद्देश्य अविश्लेषित पड़ा है। जबकि 2013 में इस उद्देश्य की शताब्दी पड़ी थी। कोई यह कह सकता है कि 'बंदी जीवन' तो बंगला में लिखा गया था, हम कैसे पढ़ सकते थे? ऐसे तर्काचार्यों के लिए श्री बनारसीदास चतुर्वेदी का यह कथन उपयुक्त होगा :

''भारत के सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी श्री शचीन्द्रनाथ सान्याल के 'बंदी जीवन' का प्रथम भाग अगस्त 1922 में प्रकाशित हुआ था। द्वितीय भाग 'बंगवाणी' में छपा था जिसका अनुवाद श्री जयचंद्र विद्यालंकार ने किया था। और तृतीय भाग के कुछ लेख 'प्रताप' में छपे थे।''[3]

हाँ, यह माना जा सकता है कि ये अनुवाद पुस्तकाकार 1963 में तीनों भाग एक साथ प्रकाशित हुए थे। जयचंद्र विद्यालंकार ने शचीन्द्र की प्रशंसा में कहा था :''वह केवल इतिहास लेखक ही नहीं, बल्कि जिस इतिहास को वह लिख रहे हैं, उसके बनाने वालों में से भी हैं; उस इतिहास के पात्रों के वह जीवन-मरण के खेल में साथी थे। यदि वह उनके भावों को पहचानते नहीं तो उनके नेता ही कैसे बनते? सच्चे विप्लव नेता में भी तो ठीक वे ही गुण चाहिए, जो एक सच्चे इतिहास-लेखक के लिए आवश्यक हैं।'' अर्थात् उम्र ही नहीं विचारों की एकता को यहाँ नोट किया जाना चाहिए। उम्र के हिसाब से शचीन्द्र, सराभा से तीन वर्ष सीनियर थे। वे 1893 में जन्मे थे और सराभा 1896 में।

''सराभा, पंजाब के लुधियाना जिले का एक चर्चित गाँव है। लुधियाना शहर से यह क़रीब पंद्रह मील की दूरी पर स्थित है। गाँव बसाने वाले रामा व सद्दा दो भाई थे। गाँव में तीन पत्तियाँ हैं–सद्दा पत्ती, रामा पत्ती व अराइयाँ पत्ती। सराभा गाँव क़रीब तीन सौ वर्ष पुराना है। और 1947 से पहले इसकी आबादी दो हज़ार के क़रीब थी, जिसमें सात-आठ सौ मुसलमान भी थे। इस

समय गाँव की आबादी चार हज़ार के क़रीब है। गाँव में 10+2 तक सरकारी हायर सेकेंडरी स्कूल है, जिसका नाम अब 'कर्तार सिंह सराभा मेमोरियल स्कूल' है। गाँव में गाँव के अनिवासी भारतीयों द्वारा स्थापित सराभा मेमोरियल आयुर्वेदिक कॉलेज व हस्पताल भी है तथा गाँव से ग़ुज़रती मुख्य सड़क पर सराभा की प्रतिमा लगी है। लुधियाना शहर के बीचों-बीच भी सराभा की एक प्रतिमा लगी है।''[5]

यह सब बहुत बाद की बातें हैं। सराभा की पहली-पहली प्रतिमाएँ हमें 'बंदी जीवन' में ही दिखायी पड़ती हैं। कहा जा चुका है कि 'बंदी जीवन' का पहला भाग 1922 में प्रकाशित हुआ था। 1915 में सराभा को फाँसी हुई थी। अर्थात् 6-7 साल बाद ही ये प्रतिमा शचीन्द्र ने गढ़ी थी। मेरा मानना है, इससे पहले यानी 1922 से पहले सामान्य जन को-शिक्षित जन को सराभा के बारे में कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं थी। सामान्य जन से मेरा अभिप्राय पंजाब के बाहर शेष भारत के जन से है। 'बंदी जीवन' के अध्याय-2 में शचीन्द्र यह दर्ज़ करते हैं :

''सन् 1915 भारत में चिरस्मरणीय रहेगा। इस साल विप्लव की जितनी बड़ी तैयारी अकारथ गयी उतनी बड़ी तैयारी सन् 1857 के ग़दर के पश्चात् पंजाब में कूका विद्रोह के सिवा और हुई कि नहीं इसमें संदेह है।''[6] तीसरे अध्याय का शीर्षक ही बंगाल और पंजाब के प्रयत्नों की एकतानता को दर्शाता है।-शीर्षक है-'सिक्ख दल का परिचय'।[7] इसी अध्याय में **कर्तार सिंह का पहला उल्लेख मिलता है।** जो 6-7 हज़ार लोग पंजाब से विप्लव करने आये थे ''उनके मुँह से टूटी-फूटी अंग्रेजी सुनने में बड़ा मज़ा आता था। अमेरिका में ऐसी ही अंग्रेजी बोलकर ये अपनी भावनाएँ व्यक्त करते थे और उम्दा अंग्रेजी न जानने से इनके किसी काम में रुकावट न पड़ती थी और फिर उन्होंने धन भी अच्छा-ख़ासा कमाया था। और सबसे बड़ी बात तो यह थी कि अपने अमेरिका-प्रवास के फलस्वरूप इन लोगों ने स्वदेश संपर्क को तोड़ नहीं दिया था। ये करते तो थे अमेरिका में कुलीगिरी या मज़दूरी, लेकिन यह जानने के लिए सदा व्यग्र रहते थे कि हमारे देश में कहाँ क्या हो रहा है। उस समय 'बंगाल की नवजागरण' की तरंग ने जिस प्रकार भारत के अन्यान्य प्रदेशों में एक भाव की हिलोर पैदा कर दी थी उसी प्रकार उसका हिलकोरा सुदूर अमेरिका में स्थित भारतीयों के हृदय में भी लगा था।''[8] अर्थात् ''जब भारत में ग़दर की चिनगारियाँ धीरे-धीरे इधर-उधर चारों ओर उड़ रही थीं तब अमेरिका में कुछ भारतीयों के जी, ही, जी में वे धधककर जल रही थीं। **इसी समय भाई करतार सिंह नामक एक तरुण युवा इनके साथ आकर सम्मिलित हुए।**''[9]

सान्याल बाबू के शब्द करतार सिंह के लिए सनद माने जा सकते हैं तथा ये आँखों-देखे सहकर्मी पर परम विश्वसनीय ढंग से दिये गये वक्तव्य हैं-''ये उड़ीसा में विनशा कॉलेज की प्रथम श्रेणी की पढ़ाई समाप्त करके विशेष कारण से अमेरिका चले गये थे। **यद्यपि सिक्खों में ये सबसे कम उम्र के थे, फिर भी इनकी अधिनायकता में मैंने कितने ही बड़ी उम्र के सिक्खों को भी काम करते देखा।**''[10] वे यह भी प्रमाणित करते हैं-''इन्होंने अपने जैसे विचार रखने वाले दो-एक व्यक्तियों की सहायता से एक संवाद पत्र निकालने का संकल्प लिया। इसी समय पंजाब के स्वनामख्यात देशभक्त लाला हरदयाल भारत में विप्लव करने की सारी आशाएँ छोड़-छाड़कर अमेरिकन सोशलिस्टों के साथ आत्मीयता स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे थे। **करतार सिंह** और **उनके मित्र** इस अवसर पर हरदयाल के पास ऐसे पत्र को प्रकाशित करने का प्रस्ताव लेकर उपस्थित हुए। स्वदेशप्रेमी हरदयाल तो ऐसे सुयोग की ताक में ही बैठे हुए थे। उन्होंने खुशी-खुशी इस काम को हाथ में ले लिया। इस प्रकार 'ग़दर' नामक विख्यात समाचार-पत्र का प्रकाशन होना आरंभ हुआ। और धीरे-धीरे इसी ने 'ग़दर पार्टी' का संगठन कर दिया। कैलीफोर्निया का 'युगांतर आश्रम' इसका केंद्रस्थल था।''[11]

सान्याल ने इसे **बीसवीं सदी के महाभारत** के रूप में याद किया है।[12] हालांकि सान्याल ने यह भी नोट किया है :

''अमेरिका प्रवासी विप्लव पंथियों की समझ में नहीं आया था कि अंग्रेजों के साथ जर्मनी का विरोध इतनी जल्दी उपस्थित हो जायेगा। फलतः इनके विप्लव की तैयारी भी इस ढंग से हो रही थी कि मानो दस-पंद्रह वर्ष के अनंतर वास्तविक 'ग़दर' शुरू होगा।''[13] इसका प्रमाण यही है कि महासमर छिड़ते समय क्रांति के लिए ये लोग बिलकुल तैयार ही नहीं थे और न विदेशियों से ही इनका अपेक्षित संपर्क हो पाया था।[14] इसी का परिणाम यह था कि जब अमेरिका से क्रांतिकारियों के दल-के-दल भारत आने लगे तब भारत में स्थित क्रांतिकारी लोग उनके साथ दिल खोलकर ठीक या सही समय पर सम्मिलित नहीं हो सके।[15]

सान्याल का यह भी मत है कि ''यदि ऐसा सम्मिलन हो जाता तो भारत का भाग्य आज कुछ और ही होता।''[16] यह आकांक्षा हो या स्वप्न इतिहासकारों से भिन्न स्वाधीनता और देशप्रेम से लबरेज़ कोई चीज़ मानी जा सकती है। ज़ाहिर है, इस विशेष परिस्थिति में इन्होंने निश्चय किया कि ग़दर पार्टी के दल-के-दल भारत में पहुँचकर भारतीय सैनिकों को अपने प्रभाव में कर लें। बस यही वे सोच सके और इसी को क्रांति का उपाय माना। जब उपाय निश्चित हो गया तब फिर क्या था हज़ारों सिक्ख विदेश में पड़े हुए अपने बोरिए-बँधने समेटकर स्वदेश को रवाना हो गये।[17]

इधर ''भारत सरकार को इस पार्टी की बहुत-सी बातों का पता चल चुका था; क्योंकि इस पार्टी के मेम्बर लोग अमेरिका में खुले ख़ज़ाने सभाओं में, भारत में ग़दर करने के संबंध में व्याख्यान दिया करते थे। 'ग़दर' नामक पत्र प्रकाशित होता ही था। सन् 1857 के महाविप्लव की दसवीं मई एक उत्सव में परिणत की

जाती थी।'' यानी सरकार सब कुछ समझ चुकी थी। सान्याल कहते हैं–

''अमेरिका से आये हुए सिक्खों में उत्साह तो अदम्य था किंतु काम करने की रीति उन्हें मालूम ही न थी। न इनका कोई केंद्र था और न शाखा ही। किसी-किसी की अधीनता में बीस-पच्चीस मनुष्य रहते थे। उसे इन बीस-पच्चीस आदमियों का सरदार कहा जाता था। ये सरदार कभी एकत्र हो जाते थे और कभी कुछ दिनों तक इनकी परस्पर भेंट ही न होती थी।''[19] **कारण वही कि इनका कोई केंद्र न था।**

लेकिन इस बारे में सब एकमत थे कि बंगाल का गुप्त क्रांतिकारी दल हमारा मार्ग दर्शन कर सकता है। सहज विश्वासी ये लोग पहले से किसी के साथ जान-पहचान न रहने के कारण पात्र-अपात्र का विचार किये बिना ही ये लोग पंजाब में विद्रोह की बातें कहने लगे। प्रमाण? प्रमाण में सान्याल स्वयं को ही पेश करते हैं–''इस समय कलकत्ता की मामूली सड़कों पर भी मैंने सुना था कि पंजाब में विप्लव की तैयारी हो रही है।''[20] दूसरा पुष्ट प्रमाण यह भी है कि 'भारत रक्षा' क़ानून बनाते समय हार्डिंज साहब ने भी इस बात का उल्लेख किया था।[21]

लेकिन इस परिस्थिति में एक सितारा चमक रहा था। और उसका नाम था करतार सिंह! क्योंकि भारत में विप्लव के इसी दौर में–''करतार सिंह ने आकर बंगाल के किसी सुपरिचित, लब्धप्रतिष्ठित सार्वजनिक नेता से मुलाकात की। उन्होंने करतार सिंह को उपदेश दिया कि तुम अपने संकल्प और सुभीते के अनुसार काम करते जाओ, बंगाल तो ठीक समय पर तुम्हारी सहायता करेगा ही।''[22]

ये नेता श्री सुरेंद्रनाथ बनर्जी थे।

'सिक्खदल' की तरह ही एक अध्याय है–'पंजाब यात्रा'। इसका आरंभ ही बंगाल और पंजाब के संबंध को दिलचस्प ढंग से उजागर करता है।

सान्याल वर्णन करते हैं :

''इस विप्लव की तैयारी के समय काशी में, बाहरी लोगों से मुलाकात करने के लिए खास-खास मकान थे। पंजाब से जो लोग मुलाकात करने आते थे वे पहले ऐसे ही खास मकान में पहुँचाए जाते थे। वहाँ से ख़बर मिलने पर दूर से आगंतुक व्यक्ति को छिपकर पहचान लिया जाता था। तब संदेह न रहने पर, उससे भेंट की जाती थी।''[23]

उदाहरण–

''मैं उस दिन काशी में ही था जब पंजाबीदल [सिक्खदल-तुलनीय] का एक मनुष्य वहाँ के विप्लव की तैयारी का समाचार लेकर हमारे पास आया। जब उसके मुँह से सुना कि विप्लवदल के लिए दो-तीन हज़ार सिख कमर कसे तैयार बैठे हैं, तब हमारा अंतरतम पुरुष आनंद से थिरकने लगा।''[24] क्यों? क्योंकि ''पंजाब के कार्यकर्त्ताओं ने आगंतुक व्यक्ति द्वारा कहला भेजा था कि रासबिहारी की हमें बहुत ज़रूरत है।''[25] क्योंकि ''दिल्ली षड्यंत्र के फ़रार असामी प्रसिद्ध कर्मवीर रासबिहारी का नाम उस समय अमेरिका तक में विश्रुत हो चुका था। और सिक्खदल ने अमेरिका में ही उनके बारे में सुन रखा था।''[26]

कई कारणों से उस समय रासबिहारी पंजाब न जा सके, इसलिए पहले वहाँ शचीन्द्रनाथ सान्याल को भेजा जाना तय हुआ। ताकि वह पंजाब की दशा अपनी आँखों से देख आयें और वहाँ का हाल बंगाल वालों को बताएँ। शचीन्द्र को पहले जालंधर भेजा गया। उस समय नवंबर का महीना ख़त्म होने को था। और पश्चिम में ठंड का मौसम था। उसी शीतकाल के प्रातःकाल लुधियाना में गाड़ी पहुँचते ही देखा कि मेरे मित्र के परिचित एक सिक्ख युवक उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। जब उनसे परिचय हुआ तभी सान्याल बाबू ने जाना कि ''यही करतार सिंह थे।''[27]

लाला हरदयाल के संदर्भ में हम देख चुके हैं कि उस युग में बम कितना पूजनीय था। बम जन-जागरण हो न हो, नवजागरण ज़रूर था। सान्याल बाबू का भी यही मत है कि, ''**इन बम गोलों के फटने से भारत में चारों ओर देशभक्तों के बीच जागृति-सी देख पड़ती थी।**''[28] करतार सिंह इस 'बम संवाद' से परम प्रसन्न हुए। क्योंकि सान्याल बाबू से मुलाकात के ठीक पहले यह समाचार उन्होंने अखबार में पढ़ लिया था कि ''खुफ़िया पुलिस के डिप्टी सुपरिंटेंडेंट श्रीयुत बसन्त चटर्जी के घर पर दो-तीन बम फेंके गये हैं।''[29] उस दिन वहाँ पर ''करतार सिंह, पृथ्वी सिंह, अमर सिंह, और रामरक्खा के सिवा शायद एक व्यक्ति कोई और उपस्थित था। करतार सिंह की उम्र उस समय उन्नीस-बीस वर्ष से अधिक न होगी।''[30] करतार सिंह बस एक ही बात दोहरा रहे थे कि हमें तो बस रासबिहारी से काम है। सान्याल बाबू बदले में पंजाब का जायज़ा लेना चाहते थे। अमरसिंह ने सच बात कही–''सच पूछिए तो हम लोगों में वास्तविक नेता की खास कमी है और इसीलिए हमें रासबिहारी की ज़रूरत है।''[31] सान्याल ने नोट किया कि ''मुझे साफ मालूम हो गया कि जिस महान व्रत में ये लोग दीक्षित हुए हैं उसके गुरुत्व का अनुभव इनकी नस-नस में भिद गया है। और अपने में शक्ति की कुछ कमी समझकर बाहर एक सहारा ढूँढ़ रहे हैं किंतु उसके साथ मैं यह भी समझ गया कि इनमें **यदि कोई सचमुच काम करने वाला है तो करतार सिंह है।**''[32]

इस विश्वास का आधार क्या था? सान्याल कहते हैं–

''मैंने इसमें जैसा आत्मविश्वास देखा वैसा आत्मविश्वास न रहने से किसी के द्वारा कोई बड़ा काम नहीं हो सकता।''[33] क्योंकि ''बहुतों में अहंकार का भाव रहने पर भी ऐसे आत्मविश्वास का भाव कम देखा जाता है। अहंकार और आत्मविश्वास अलग-अलग दो चीज़ें हैं, अहंकार दूसरे पर चोट करता है, किंतु जो अहंकार दूसरे पर नोक-झोंक किये बिना ही अपने प्राणों में

शक्ति के अनुभव को जाग्रत करता है, वही आत्मविश्वास है।''[34]

1922 में, हम इसे करतार सिंह का पहला निष्पक्ष मूल्यांकन कह सकते हैं। चरित्र का आकलन यह कहीं से भी सब्जेक्टिव नहीं है। कार्य और उद्देश्य के आधार पर किया गया है इसे। जोश और होश की बानगी के लिए सान्याल-करतार संवाद को देखा जा सकता है-

''अब करतार सिंह ने मुझसे पूछा, 'अस्त्र-शस्त्र आदि देकर के बंगाल हमारी कहाँ तक सहायता कर सकता है? बंगाल में कितनी हज़ार बंदूकें हैं?' इत्यादि।

मैंने कहा-'आप क्या ख़याल करते हैं? बंगाल में कितने अस्त्र-शस्त्र होंगे?'

करतार सिंह-'मैं तो समझता हूँ कि बंगाल में काफी हथियार मौजूद कर लिये गये हैं। क्योंकि बंगाल तो बहुत दिनों से विप्लव की तैयारी कर रहा है। और हमारे दल के परमानंद के एक बंगाली मित्र ने उन्हें पाँच सौ रिवॉल्वर का वचन दिया है। इसके लिए परमानंद बंगाल गये हैं।'

मैं, 'जिन्होंने परमानंद से यह बात कही है वह कोई फालतू आदमी जँचता है। क्योंकि बंगाल में कोई कहीं पाँच सौ रिवॉल्वर न दे सकेगा। जिन्होंने यह बात कही है उन्होंने गप्प उड़ा दी है।'

करतार सिंह, 'तो फिर बंगाल हमको किस प्रकार की सहायता देगा? तो क्या वहाँ भी पंजाब के साथ ही साथ ग़दर होगा? बंगाल में आपके अधीन काम करने वाले कितने हैं?' ''[35] सान्याल बाबू ने ये बातें ध्यान से सुनीं। और कोई होता तो वे इनका कोई उत्तर न देते। लेकिन करतार सिंह पर उन्हें विश्वास था उन्होंने न केवल उन्हें आश्वासन दिये, बल्कि गोलियाँ, रिवॉल्वर **और अधिक बेहतर बंगाली बम** भी दिए।[36]

करतार सिंह के बारे में उसकी सक्रियता और जोश के बारे में, निर्भीकता और साहस के बारे में, त्याग और उद्देश्य के प्रति समर्पण के बारे में सर्वाधिक सूचनाएँ ब्रिटिश गवर्नमेंट के पास ही थीं-या, हो सकती थीं। क्योंकि वह 'सबसे ख़तरनाक मुजरिम' था। समझा जा सकता है कि सान्याल बाबू ने उसके बारे में जो सूचनाएँ दी हैं वे ही उसे 'सबसे ख़तरनाक मुजरिम' का स्वाभाविक ख़िताब दिलवाती हैं। देखना चाहिए कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद इस देशभक्त, जोशीले, समझदार और साहसी नौजवान का क्या आकलन करती है? इसका सबसे सारगर्भित रूप-कर्तार सिंह सराभा संबंधी लाहौर ट्रिब्यूनल के फैसले में सुरक्षित है। मूल अंग्रेजी की जगह इसकी अनूदित प्रस्तुति यहाँ हिंदी-पाठक वर्ग के लिए दी जा रही है जिसे प्रो. चमनलाल ने अपनी पुस्तिका-'गदरपार्टी नायक : कर्तार सिंह सराभा'-में अविकल रूप से दिया है।[37]

''(39) **कर्तार सिंह पुत्र मंगल सिंह, सराभा गाँव का जाट, थाना रायकोट, जिला लुधियाना।**

इस अभियुक्त ने अपने खिलाफ लगे आरोपों के जवाब में खुद को निर्दोष (पृ. 545) बताया, अपनी उम्र 18½ साल बतायी है। लेकिन वह निश्चय ही उससे ज़्यादा उम्र का है। और संभवत: वह बीस वर्ष का होगा। अपनी उम्र के बावजूद वह इन 61 अभियुक्तों में **सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक है।** और उसका 'डोज़ियर' (रिपोर्ट फाइल) सबसे भारी है। इस षड्यंत्र में, अमेरिका में, रास्ते में और **भारत में ऐसी कोई जगह नहीं है, जहाँ इस अभियुक्त ने अपनी भूमिका न निभाई हो।** पूरे मुकदमे के दौरान वकील द्वारा किये सवालों में से उसने किसी का जवाब नहीं दिया। पूरे मुकदमे के दौरान वकील द्वारा किये सवालों में से (एक या दो सवालों के अपवाद को छोड़कर) या खुद जवाबी सवाल नहीं किये। यद्यपि उसने दो लंबे बयान (पृ. 443 व 480) दिए। उसने 23 जनवरी को साहनेवाला डकैती में हिस्सा लेना माना (जिसमें खुशीराम की हत्या हुई थी। और अमेरिका में हरदयाल से अपने संबंधों व सानफ्रांसिस्को में 'ग़दर प्रेस' संबंधी अपनी उपस्थिति को भी खुले रूप से स्वीकार किया।''[38]

उसके खिलाफ छह सरकारी गवाहों, जिन्होंने इकबाले जुर्म किया है, की गवाही, इच्छर सिंह, पुलिस जासूस व अन्य 24 लोगों की गवाही है।

वायदामाफ गवाह अमर सिंह ने कहा है कि यह अभियुक्त नवंबर 1913 में 'ग़दर प्रेस' का कर्मचारी था, जहाँ वह खुद भी काम करता था। और अमर सिंह की कहानी आगे चलती है।- अभियुक्त ने लाडोवाल मीटिंग और मोगा मीटिंग में हिस्सा लिया, जहाँ वह अभियुक्त गुज्जर सिंह का नाम 'मदद के लिए तैयार' रूप में लेता है। (इस बिंदु पर नवाब खाँ का भी मत है।) वह हथियारों की खरीद के लिए फंड जुटाने के लिए डकैतियों का सुझाव देता है और वह जगतराम का 12 नवंबर को फगवाड़ा मीटिंग संबंधी सुझाव लाता है। वह लाहौर लौटता है और 'हिंदू होटल' में (संभवत:) नौरंग सिंह के छद्म नाम से रहता है। **वह हथियारों के लिए कलकत्ता जाता है।** लाहौर में वह गवाह को बताता है कि जगतराम हथियारों के लिए पेशावर गया है और वह लाहौर मैगज़ीन को लूटने का सुझाव देता है। मोगा मीटिंग में वह इस योजना को लागू करने के प्रबंधों के बारे में बताता है। बदोवाल-मुलांपुर मीटिंग में यह फैसला लिया जाता है कि लाहौर छावनी में आदमी इकट्ठे हैं और इस अभियुक्त को टेलीग्राफ तारें काटने का सामान जुटाने को कहा जाता है। बाद में, लाहौर में वह गवाह को बताता है कि एक सिपाही की बदली हो जाने से लाहौर योजना असफल हो गयी है तथा उसे लाहौर छावनी भेजा जाता है ताकि इकट्ठे हुए आदमियों को वापस ला सके। वह लुधियाना में गवाह से मिलता है और उसे बताता है कि एक बंगाली नवंबर अंत तक आयेगा। और करीब 30 दिसंबर को गवाह उसे जालंधर शहर के प्लेटफार्म पर एक बंगाली के साथ

मिलता है। एक बाग में तब बंगाली के साथ हथियारों, बमों व फंड के बारे में विचार-विमर्श होता है और बंगाली, अभियुक्त को एक रिवॉल्वर व कुछ गोलियाँ देता है। गवाह अभियुक्त के साथ अन्य मीटिंगों के बारे में भी बताता है, जिसमें से कपूरथला में एक मीटिंग में निधान सिंह और पिंगले भी साथ हैं जिनमें से अंतिम व्यक्ति कहता है कि 'बंगाली पार्टी' का एक बंगाली भी सहयोग करेगा।''[39]

अमर सिंह की तरह ही वायदामाफ गवाह मूला सिंह भी ये बातें बताता है। साथ ही वह यह और कहता है कि, ''अभियुक्त 'ग़दर प्रेस' का कर्मचारी था, कि दिसंबर के शुरू में उसने अभियुक्त भाई परमानंद से इस अभियुक्त का पता पूछा। उसे सुरसिंध के अभियुक्त जगत सिंह से पता चला कि यह अभियुक्त और निहाल सिंह कपूरथला गये हैं और बाद में, दिसंबर अंत के आस-पास वह उन्हें अमृतसर में मिलता है और उसे अमर सिंह, पिंगले और परमानंद-II के पहुँचने का पता चलता है। गवाह अभियुक्त के बारे में बताता है कि वह वीरपाली धर्मशाला में षड्यंत्रकारियों की मीटिंग में हिस्सा ले रहा है और कहता है कि अभियुक्त ने उसे सुझाव दिया कि भाई परमानंद फंड दे सकते हैं। हमें इस गवाह से पता चलता है कि बंगाल में अभियुक्त को हथियार न मिलने का कारण उस पर जासूस होने का शक था। लेकिन वह गवाह को बताता है कि उसने अपने मालवा के आदमियों को दो पिस्तौलें दी हैं। मथुरा सिंह बम बनाने का प्रस्ताव देता है और क़रीब दो दिन बाद अभियुक्त गवाह को बताता है कि मालवा क्षेत्र की डकैती में एक हज़ार रुपये मिले हैं, जिसमें से 570/- रुपये उसके आदमियों को बीकानेर से हथियार व पशु खरीदकर लाने के लिए दिये गये हैं और 250/- रुपये की राशि वह गवाह को दे देता है, जिसमें से डेढ़ सौ रुपये की राशि वह गवाह को दे देता है, जिसमें से 150/- मथुरा सिंह, निधान सिंह व परमानंद-II को झब्बेवाल में बम बाने के लिए दे दिए जाते हैं।''[40]

15 फरवरी को उसे हम रासबिहारी, पिंगले व अन्यों के साथ लाहौर के घर नं. 2 में देखते हैं, जहाँ वह 'ग़दर की गूँज' लिखने में लगा है। और उसी शाम (जासूस के बयान से तुलना करें) वह झंडों के लिए रंगीन कपड़ा लाता है। 16 फरवरी की शाम को वह घर नं. 1 में षड्यंत्रकारियों की एक मीटिंग में हिस्सा लेता है। उसे पिंगले के साथ झंडों और 'ग़दर दी गूँज' की प्रतियों के साथ लुधियाना और फीरोज़पुर सैनिकों को फँसाने और आदमी इकट्ठे करने भेजा जाता है और वह 18 फरवरी को लौटता है, जब पुलिस जासूस के संदेह के कारण वह विद्रोह की ता. बदलकर 21 से 19 फरवरी करने के पक्ष में है। तदनुसार उसे झंडों, 'ग़दर संदेश' की प्रतियों, फाइलों व प्लास के साथ फीरोज़पुर भेजा जाता है।''[41]

''वायदामाफ गवाह नवाब खान ने बताया है कि एस्टोरिया में 1912 के अंत में उसने अभियुक्त को अपने चिंतन में 'परिवर्तित' कर लिया; लेकिन हमें इस पर संदेह है। यह अभियुक्त अहंकारी व्यक्ति है; और संभव है कि उसने यह विचार बंगाल में ग्रहण किये, जहाँ उसने शिक्षा हासिल की। अभियुक्त संबंधी उसका विवरण यह है-1912 के अंत के आस-पास अभियुक्त ने एस्टोरिया की मीटिंग में भाषण दिया, जब 'हिंदुस्तानी ऐसोसिएशन' स्थापित की गयी; 1913 के आरंभ में वह कैलिफोर्निया चला जाता है।[42]

अभियुक्त 13 नवंबर को बदोवाल में लाहौर मैगज़ीन पर हमले का विचार करने के लिए मिलने का फैसला करते हैं। ट्रेन में वह एक भर्ती पार्टी को संबोधित करता है।...25 या 26 नवंबर को लाहौर छावनी पर हमले की योजनाओं पर विचार होता है।... 11 दिसंबर को बुडोबरियां में अभियुक्त चहेड़ू के दोनों ओर टेलीग्राफ तार काट देने और एक सैनिक पुल-गार्ड पर हमला करने का सुझाव देता है। वह नैनीताल के एक अमीर ब्राह्मण (सरकार का यार) को लूटने का सुझाव भी देता है।...लाहौर के रास्ते में अभियुक्त इस गवाह को अमेरिका में हरदयाल और 'ग़दर प्रेस' के साथ अपने संबंधों के बारे में बताता है।[43]

गवाह इंदर सिंह ने सिर्फ इतना कहा है कि अनारकली के हत्यारे ने इस अभियुक्त को साहनेवाल और मंसूरां डकैतियों में शामिल बताया है।

विचारधारात्मक मामलों में वायदामाफ गवाह सुच्चा सिंह ने भी अभियुक्त के खिलाफ लंबी कहानी कही है :

''अभियुक्त पहले गवाह को उसके अपने बोर्डिंग हाउस में मिलता है और **'ग़दर की गूँज' की बात करता है। इस तरह इस विद्यार्थी के मस्तिष्क को विषाक्त करने में मदद करता है।** इस वायदामाफ गवाह ने कहा है कि अभियुक्त की **सुबह की प्रार्थना 'मारो फिरंगी को'** से शुरू होती थी और यह कि **उसका धर्म-''यूरोपियों को मारना है।''**[44]

हद तो यह है, कि-

''अभियुक्त ने अमेरिका में ग़दर पार्टी के साथ अपने संबंधों व हरदयाल से अपने परिचय को पूरी तरह स्वीकार किया है। उसने एस्टोरिया व सेक्रामेंटों की मीटिंगों में हिस्सा लेना भी स्वीकार किया है और कहा है कि 'वे भाषण अमेरिका में विद्रोह फैलाने वाले नहीं समझे जाते थे।' उसे भारत में 'युगांतर आश्रम की तर्ज़ पर' आश्रम स्थापित करने और ज़रूरी हो तो गुप्त रूप से साहित्य बाँटने भेजा गया था।''[45]

अर्थात् उसने हर वह बात कुबूल की जिसका राजनीतिक महत्त्व था। बात या सवाल का हर जवाब भी इसी तरह राजनीतिक शैली में ही उसके द्वारा दिया गया। यानी काम किया ज़रूर लेकिन कुछ ख़ास ढंग से। जैसे-''उसने झंडों के लिए कपड़ा ज़रूर ख़रीदा, झंडा चूँकि 'युगांतर आश्रम' का चिह्न था, जो